शास्त्री (B.A.) प्रथम वर्ष

हिन्दी साहित्य- चतुर्थ पत्र

साहित्य केवल आनन्द प्रदान नहीं करता बल्कि वह हमें हमारी सभ्यता संस्कृति, समाज और इतिहास से जोड़ता है। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में शास्त्री स्तर पर हिन्दी साहित्य का जो पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है उसके मूल में यही उद्देश्य है।

हिन्दी काव्य (संवत् 1350-1950 तक)

1. भक्तिकाल तथा रीतिकाल के प्रमुख कवियों- कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, बिहारी तथा रहीम का काव्य पढ़ाया जाता है। विशेष रूप से रामचरितमानस का एक अंश पढाया जाता है, जिससे छात्र भक्ति काव्य के लालित्य और मधुरता से परिचित हो सकें। मानस के अंश को पढ़कर ही उसके नैतिक मूल्यों को समझ सकेंगे।
2. छायावाद तथा प्रगतिवाद के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, नागार्जुन, त्रिलोचन आदि की कविताओं को पढ़ाया जाता है जिससे छात्र कविता के बदलते हुए स्वरूप को समझ पाएँगे।
3. प्रयोगवाद तथा नई कविता ने हिन्दी कविता में नई भाषा, नये मुहावरे, नये प्रयोग को जन्म दिया है। इसलिए प्रयोगवाद तथा नई कविता की कुछ कविताओं को पढ़कर उस नवीनता से परिचित हो पाएँगे।
4. इस सत्र में **समकालीन कविता** के मुख्य कवि भवानी प्रसाद मिश्र तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कुछ कविताओं को इसलिए पढ़ाया जाता है, जिससे छात्र साहित्य की नवीनता को समझ पाएँगे।

हिन्दी साहित्य का इतिहासः एक परिचय

1. आदिकाल तथा मध्यकाल की ऐतिहासिक पृष्टभूमि, भक्ति के प्रकार संप्रदाय तथा निर्गुण सगुण भक्ति के स्वरूप में अंतर पढ़ाया जाएगा।
2. इस पत्र के माध्यम से छात्र हिन्दी काव्य चेतना तथा आधुनिक काल के सभी काव्यान्दोलनों (छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता तथा समकालीन कविता) की पृष्टभूमि, विशेषताओं, परिवर्तन के कारणों आदि को विस्तार से जान सकेंगे।
3. इसमें सृजनात्मक लेखन कैसे की जाए इसे भी सीख और समझ पाएँगे।
4. इसी पत्र में मोहन राकेश द्वारा लिखित नाटक आषाढ के एक दिन पढ़ाया जाएगा, जिससे छात्र नाट्य कला को समझ सकेंगे।
5. संस्कृत साहित्य में नाटक की एक लंबी परंपरा है और यह नाटक कालीदास के जीवन पर केन्द्रित है। इसे पढ़कर प्राचीनता के साथ-साथ आधुनिक भाव बोध की समझ को प्राप्त कर पाएँगे।